لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤی ﴿۱۹﴾ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰی ﴿۲۰﴾

का उस पर कुछ एह्सान नहीं जिस का बदला दिया जाए[21] सिर्फ़ अपने रब की रिज़ा चाहता जो सब से बुलन्द है

وَلَسَوْفَ یَرْضٰی ﴿۲۱﴾ ع۲۱

और बेशक क़रीब है कि वोह राज़ी होगा[22]

اٰیاتها ۱۱ ﴿۹۳﴾ سُوْرَةُ الضُّحٰی مَکِّیَّةٌ ۱۱ رکوعها ۱

सूरए दुहा मक्किय्या है, इस में ग्यारह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्‌म वाला[1]

وَالضُّحٰی ﴿۱﴾ وَالَّیْلِ اِذَا سَجٰی ﴿۲﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰی ﴿۳﴾ وَ

चाश्त की क़सम[2] और रात की जब पर्दा डाले[3] कि तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मक्रूह जाना और

لَلْاٰخِرَةُ خَیْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰی ﴿۴﴾ وَلَسَوْفَ یُعْطِیْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰی ﴿۵﴾

बेशक पिछली तुम्हारे लिये पहली से बेहतर है[4] और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें[5] इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे[6]

**21 शाने नुज़ूल :** जब ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ह़ज़रते बिलाल को बहुत गिरां क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद किया तो कुफ़्फ़ार को ह़ैरत हुई और उन्हों ने कहा कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ऐसा क्यूं किया, शायद बिलाल का उन पर कोई एह्सान होगा जो उन्हों ने इतनी गिरां क़ीमत दे कर ख़रीदा और आज़ाद किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और ज़ाहिर फ़रमा दिया गया कि ह़ज़रते सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ का येह फ़े'ल मह़्ज़ अल्लाह तआला की रिज़ा के लिये है किसी के एह्सान का बदला नहीं और न उन पर ह़ज़रते बिलाल वग़ैरा का कोई एह्सान है। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ ने बहुत से लोगों को उन के इस्लाम के सबब ख़रीद कर आज़ाद किया। **22 :** उस ने'मतो करम से जो अल्लाह तआला उन को जन्नत में अ़ता फ़रमाएगा। **1 :** "सूरए वदुहा" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, ग्यारह आयतें, चालीस कलिमे, एक सो बहत्तर ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** एक मरतबा ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा कि चन्द रोज़ वह़्‌य न आई तो कुफ़्फ़ार ने ब तरीक़े ता'न कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को उन के रब ने छोड़ दिया और मक्रूह जाना इस पर "وَالضُّحٰی" नाज़िल हुई। **2 :** जिस वक़्त कि आफ़्ताब बुलन्द हो क्यूं कि येह वक़्त वोही है जिस में अल्लाह तआला ने ह़ज़रते मूसा علیہ السلام को अपने कलाम से मुशर्रफ़ किया और इसी वक़्त जादूगर सज्दे में गिरे। **मस्अला :** चाश्त की नमाज़ सुन्नत है और इस का वक़्त आफ़्ताब के बुलन्द होने से क़ब्ले ज़वाल तक है, इमाम साहिब के नज़्दीक चाश्त की नमाज़ दो रक्अ़तें हैं या चार एक सलाम के साथ। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि दुहा से दिन मुराद है। **3 :** और उस की तारीकी आ़म हो जाए। इमाम जा'फ़रे सादिक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि चाश्त से मुराद वोह चाश्त है जिस में अल्लाह तआला ने ह़ज़रते मूसा علیہ السلام से कलाम फ़रमाया। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि चाश्त इशारा है नूरे जमाले मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم की त़रफ़ और शब किनाया है आप के गेसूए अम्बरीन से। (روح البیان) **4 :** या'नी आख़िरत दुन्या से बेहतर, क्यूं कि वहां आप के लिये मक़ामे मह़मूद व ह़ौज़े मौरूद व ख़ैरे मौऊ़द और तमाम अम्बिया व रुसुल पर तक़द्दुम और आप की उम्मत का तमाम उम्मतों पर गवाह होना और आप की शफ़ाअ़त से मोमिनीन के मर्तबे और दरजे बुलन्द होना और बे इन्तिहा इ़ज़्ज़तें और करामतें हैं जो बयान में नहीं आतीं और मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना भी बयान फ़रमाए हैं कि आने वाले अह़वाल आप के लिये गुज़श्ता से बेहतर व बरतर हैं गोया कि ह़क़ तआला का वा'दा है कि वोह रोज़ बरोज़ आप के दरजे बुलन्द करेगा और इ़ज़्ज़त पर इ़ज़्ज़त और मन्सब पर मन्सब ज़ियादा फ़रमाएगा और साअ़त ब साअ़त आप के मरातिब तरक़्क़ियों में रहेंगे। **5 :** दुन्या व आख़िरत में **6 :** अल्लाह तआला का अपने ह़बीब صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم से येह वा'दए करीमा उन ने'मतों को भी शामिल है जो आप को दुन्या में अ़ता फ़रमाईं, कमाले नफ़्स और उ़लूमे अव्वलीनो आख़िरीन और ज़ुहूरे अम्र और ए'लाए दीन और वोह फ़ुतूह़ात जो अ़ह्दे मुबारक में हुईं और अ़ह्दे सह़ाबा में हुईं और ता क़ियामत मुसल्मानों को होती रहेंगी और



www.dawateislami.net

اَلَمْ یَجِدْكَ یَتِیْمًا فَاٰوٰىۖ(۶) وَ وَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰىۖ(۷) وَ وَجَدَكَ

क्या उस ने तुम्हें यतीम न पाया फिर जगह दी[7] और तुम्हें अपनी महब्बत में ख़ुद रफ़्ता पाया तो अपनी त़रफ़ राह दी[8] और तुम्हें

عَآىٕلًا فَاَغْنٰىؕ(۸) فَاَمَّا الْیَتِیْمَ فَلَا تَقْهَرْؕ(۹) وَ اَمَّا السَّآىٕلَ فَلَا

ह़ाजत मन्द पाया फिर ग़नी कर दिया[9] तो यतीम पर दबाव न डालो[10] और मंगता को न

تَنْهَرْؕ(۱۰) وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ۠(۱۱)

झिड़को[11] और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चरचा करो[12]

दा'वत का आ़म होना और इस्लाम का मशारिक़ व मग़ारिब में फैल जाना और आप की उम्मत का बेहतरीन उमम होना और आप के वोह करामात व कमालात जिन का **अल्लाह** ही आ़लिम है, और आख़िरत की इ़ज़्ज़तो तक्रीम को भी शामिल है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को शफ़ाअ़ते आ़म्मा व ख़ास्सा और मक़ामे महमूद वग़ैरा जलील ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दोनों दस्ते मुबारक उठा कर उम्मत के ह़क़ में रो कर दुआ़ फ़रमाई और अ़र्ज़ किया "اَللّٰهُمَّ اُمَّتِیْ اُمَّتِیْ" **अल्लाह** तआ़ला ने जिब्रील को हुक्म दिया कि मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में जा कर दरयाफ़्त करो रोने का क्या सबब है, बा वुजूदे कि **अल्लाह** तआ़ला दाना है, जिब्रील ने ह़ब्बे हुक्म ह़ाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें तमाम ह़ाल बताया और ग़मे उम्मत का इ़ज़्हार फ़रमाया। जिब्रीले अमीन ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया कि तेरे ह़बीब येह फ़रमाते हैं, बा वुजूदे कि वोह ख़ूब जानने वाला है। **अल्लाह** तआ़ला ने जिब्रील को हुक्म दिया जाओ और मेरे ह़बीब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) से कहो कि हम आप को आप की उम्मत के बारे में अ़न्क़रीब राज़ी करेंगे और आप को गिरां ख़ात़िर न होने देंगे, ह़दीस शरीफ़ में है कि जब येह आयत नाज़िल हुई सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब तक मेरा एक उम्मती भी दोज़ख़ में रहे मैं राज़ी न होउंगा। आयते करीमा साफ़ दलालत करती है कि **अल्लाह** तआ़ला वोही करेगा जिस में रसूल राज़ी हों और अह़ादीसे शफ़ाअ़त से साबित है कि रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिज़ा इसी में है कि सब गुनहगाराने उम्मत बख़्श दिये जाएं, तो आयत व अह़ादीस से क़त़्ई त़ौर पर येह नतीजा निकलता है कि हुज़ूर की शफ़ाअ़त मक़्बूल और ह़स्बे मरज़िये मुबारक गुनहगाराने उम्मत बख़्शे जाएंगे, سُبْحٰنَ اللّٰه क्या रुत्बए उ़ल्या है कि जिस परवर्दगार को राज़ी करने के लिये तमाम मुक़र्रबीन तक्लीफ़ें बरदाश्त करते और मेह़नतें उठाते हैं, वोह इस ह़बीबे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को राज़ी करने के लिये अ़त़ा आ़म करता है। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने उन ने'मतों का ज़िक्र फ़रमाया जो आप के इब्तिदाए ह़ाल से आप पर फ़रमाईं। **7 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अभी वालिदए माजिदा के बत़ून में थे, ह़म्ल दो माह का था कि आप के वालिद साह़िब ने मदीनए शरीफ़ा में वफ़ात पाई और न कुछ माल छोड़ा, न कोई जगह छोड़ी, आप की ख़िदमत के मुतकफ़्फ़िल आप के दादा अ़ब्दुल मुत्त़लिब हुए, जब आप की उ़म्र शरीफ़ चार या छ साल की हुई तो वालिदा साह़िबा ने भी वफ़ात पाई, जब उ़म्र शरीफ़ आठ साल की हुई तो आप के दादा अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने भी वफ़ात पाई, उन्हों ने अपनी वफ़ात से पहले अपने फ़रज़न्द अबू त़ालिब को जो आप के ह़क़ीक़ी चचा थे आप की ख़िदमत व निगरानी की वसिय्यत की। अबू त़ालिब आप की ख़िदमत में सरगर्म रहे, यहां तक कि आप को **अल्लाह** तआ़ला ने नुबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया। इस आयत की तफ़्सीर में मुफ़स्सिरीन ने एक मा'ना येह बयान किये हैं कि यतीम ब मा'ना यक्ता व बे नज़ीर के है जैसे कि कहा जाता है : "दुर्रे यतीमा"। इस तक़्दीर पर आयत के मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को इ़ज़्ज़ो शरफ़ में यक्ता व बे नज़ीर पाया और आप को मक़ामे क़ुर्ब में जगह दी और अपनी ह़िफ़ाज़त में आप के दुश्मनों के अन्दर आप की परवरिश फ़रमाई और आप को नुबुव्वत व इस्तिफ़ा (चुनने) व रिसालत के साथ मुशर्रफ़ किया। (خازن وجمل وروح البیان) **8 :** और ग़ैब के असरार आप पर खोल दिये और उ़लूमे ماکان وما یکون अ़त़ा किये, अपनी ज़ात व सिफ़ात की मा'रिफ़त में सब से बुलन्द मर्तबा इनायत किया। मुफ़स्सिरीन ने एक मा'ना इस आयत के येह भी बयान किये हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को ऐसा वारफ़्ता पाया कि आप अपने नफ़्स और अपने मरातिब की ख़बर भी नहीं रखते थे तो आप को आप के ज़ातो सिफ़ात और मरातिबो दरजात की मा'रिफ़त अ़त़ा फ़रमाई। **मस्अला :** अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام सब मा'सूम होते हैं नुबुव्वत से क़ब्ल भी, नुबुव्वत से बा'द भी और **अल्लाह** तआ़ला की तौह़ीद और उस के सिफ़ात के हमेशा से आ़रिफ़ होते हैं। **9 :** दौलते क़नाअ़त अ़त़ा फ़रमा कर। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि तवंगरी कस्रते माल से ह़ासिल नहीं होती, ह़क़ीक़ी तवंगरी नफ़्स का बे नियाज़ होना। **10 :** जैसा कि अहले जाहिलिय्यत का त़रीक़ा था कि यतीमों को दबाते और उन पर ज़ियादती करते थे। ह़दीस शरीफ़ में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुसल्मानों के घरों में वोह बहुत अच्छा घर है जिस में यतीम के साथ अच्छा सुलूक किया जाता हो और वोह बहुत बुरा घर है जिस में यतीम के साथ बुरा बरताव किया जाता है।" **11 :** या कुछ दे दो या हुस्ने अख़्लाक़ और नरमी के साथ उ़ज़्र कर दो। येह भी कहा गया है कि साइल से त़ालिबे इ़ल्म मुराद है, उस का इक्राम करना चाहिये और जो उस की ह़ाजत हो उस का पूरा करना और उस के साथ तुर्शरूई व बद ख़ुल्क़ी न करना चाहिये। **12 :** ने'मतों से मुराद वोह ने'मतें हैं जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अ़त़ा



www.dawateislami.net